माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के अध्ययन आदतों का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वर नगर, दरभंगा

के अंतर्गत शिक्षा विषय में

पीएच. डी. उपाधि हेतु उपस्थापित

शोध प्रारूप

Supervisor

Nidhi Vatsa
07/02/24

Dr. NIDHI VATSA, Assistant Prof

B.Ed. (Regular) D.D.E,

L.N.M.U. Darbhanga

Dr. Nidhi Vatsa
Assistant Professor
B.Ed. Regular
LNMU
...anga

Investigator

Rekha Kumari
07-02-24

Rekha Kumari

Roll No -05 (E2206114)

PAT -2021-22

समस्या कथन:

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के अध्ययन आदतों का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

प्रस्तावना :

विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता के लिए अध्ययन की आदतें महत्वपूर्ण हैं। जो छात्र अध्ययन की अच्छी आदतें विकसित करते हैं उनके शैक्षणिक लक्ष्यों को प्राप्त करने और अपने करियर में सफल होने की अधिक संभावना होती है। छात्रों को अपनाई जाने वाली आवश्यक अध्ययन आदतों में से एक अनुकूल अध्ययन वातावरण बनाना है। इसका मतलब है एक ऐसा स्थान बनाना जो विकर्षणों और रुकावटों से मुक्त हो।इससे उन्हें प्रेरित, केंद्रित और संगठित रहने में मदद मिलेगी। वे क्या हासिल करना चाहते हैं, इसकी स्पष्ट समझ के साथ, छात्र एक कार्ययोजना बना सकते हैं और उसके अनुसार अपने कार्यों को प्राथमिकता दे सकते हैं। समय प्रबंधन भी अध्ययन की एक आवश्यक आदत है।

अध्ययन की आदतें ही वह तरीका है जिससे कोई व्यक्ति पढ़ाई करता है। यानी वे आदतें जो छात्र अपने स्कूल के वर्षों के दौरान बनाते हैं। अध्ययन की अच्छी आदतों के बिना कोई भी छात्र सफल नहीं हो सकता है।शिक्षा व्यक्ति की संपूर्णता का परिमाप हैं यह व्यक्ति के चरित्र को उत्कृष्ट बनाती हैं। शिक्षा से ही व्यक्ति का चरित्र प्रखर बनता हैं। शिक्षा से ही व्यक्ति को सही रूप में देखा जाता हैं। षिक्षा से ही व्यक्ति सही रूप में चिंतन करना सीखता हैं। शिक्षा विहीन मानव संपूर्णता की प्राप्ति नहीं कर सकता हैं।

इस प्रकार शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया हैं। बालक प्रारंभ में माता-पिता व अन्य सदस्यों से सीखता हैं। घर से बाहर निकलने के पश्चात् वह विद्यालय खेल के मैदान तथा पड़ोस से नवीन अनुभव प्राप्त करने का परिणाम यह होता हैं, कि वह अपने वातावरण तथा जीवन में आने वाली नवीन परिस्थितियों से समायोजन करना सीख जाता हैं। इस प्रकार से षिक्षा का क्षेत्र व्यापक हैं।

जन्म से ही व्यक्ति अपने वातावरण से कुछ न कुछ सीखता रहता हैं। उसकी बहुत सी सीखी हुई क्रिया बार-बार एक ही रूप में घटित होने के कारण स्थायी आचरण का रूप धारण कर लेती हैं। इन्हीं स्थायी आचरणों को आदत कहा जाता हैं। आदतों को मनुष्य में सीखे हुए व्यवहारों में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता हैं। जिस कार्य को हम बार-बार करते हैं वे ही हमारी आदत बन जाती हैं।

आदत की परिभाषा:-

गिलिलेण्ड के अनुसार - "आदत वह अर्जित अनुभव हैं जो व्यवहार परिवर्तन से आती हैं, अधिगम की प्रक्रिया से यह परिवर्तन आते हैं।"

संकेत शब्द :- माध्यमिक विद्यालय, विद्यार्थी,शैक्षिक उपलब्धि, अध्ययन आदत।

Rekha Kumari
07-02-24

Nidhi Vatsa
07/02/24

2.1 संबंधित साहित्य का अध्ययन:
साहित्य वह दर्पण है जो अतीत को दर्शाता है। भविष्य की संभावनाओं को देखता है और प्रस्तुत करता है। पिछला साहित्य एक दिशा निर्देश देता है और समस्या में अंतर्दृष्टि विकसित करता है।

अतः रिसर्च का एक अहम पहलू है संबंधित साहित्य की समीक्षा करना। यह शोध के लिए सैद्धांतिक आधार देती है और साथ ही आपको अपने शोध की प्रकृति को निर्धारित करने में भी मदद करती है। इतना ही नहीं विषय के बारे में ज्ञान बढ़ाने के अलावा साहित्य समीक्षा लिखने से क्षेत्रों में कौशल प्राप्त होता है और प्रदर्शित होता है।"सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन शोधकर्त्री को अपने विशेष क्षेत्र का विशेष ज्ञान देता है। साथ ही यह अध्ययन को वैज्ञानिक पद्धिति पर अग्रसर करने में मदद करता है।"

2.1 साहित्य समीक्षा:
भारत में किए गए शोध अध्ययन:-
2.1.1 सक्सेना (1968): 'सक्सेना' ने अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि में संबंध पर एक अध्ययन किया।

निष्कर्ष:अध्ययन आदतों और शैक्षिक उपलब्धि में कोई संबंध नहीं पाया गया।

2.1.2 पटेल के. एवं वर्स ट्रेटन (1972):'पटेल के. एवं वर्स ट्रेटन' ने जेसूट स्कूल एवं महाविद्यालय के छात्रों की अध्ययन आदतों का अध्ययन किया।

निष्कर्ष: आधे से ज्यादा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उनकी अध्ययन आदतों के अनुरूप थी।

2.1.3 शाह एच. पी. (1978):' शाह एच. पी.' ने एस. पी. यू. के जिले में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के बालकों की अध्ययन आदतों का अध्ययन किया।

निष्कर्ष: बालकों के निवास स्थान, उनके शिक्षा स्तर, उनकी उम्र तथा पारिवारिक स्थिति का प्रभाव उनकी अध्ययन आदतों पर पड़ता हैं।
2.1.4 डॉ. एस. एल. चोपड़ा (1982): चोपड़ा' ने छात्रों के अध्ययन आदत का मापन करने के लिए अध्ययन आदत मापनी का विकास किया।

निष्कर्ष: उन्होंने पाया कि छात्रों की शिक्षा के अध्ययन आदतों का मापन करने के लिए अध्ययन आदत मापनी एक विष्वसनीय एवं वैध मापनी हैं।
2.1.5

विदेशों में किए गए शोध अध्ययन:-
2.1.6 रिग्नीस (1955)'रिग्नीस' ने अध्ययन आदतों और शैक्षिक उपलब्धि पर एक अध्ययन किया।

निष्कर्ष: इसमें उन्होंने 63 पुरूषों और 37 स्त्रियों को न्यादर्ष हेतु चयनित किया और खण्ड विष्लेषण तकनीक के द्वारा निष्कर्ष निकाला और यह पाया कि अध्ययन आदतों और शैक्षिक उपलब्धि में कोई संबंध नहीं हैं।

Nidhi Vatsa
07/04/24

2.1.7 टटल (1956)'टटल' ने कॉलेज शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन किया।

निष्कर्ष:उन्होंने पाया कि 90 : शिक्षक विष्वसनीय हैं, जो अपने मूलभूत सिद्धांतों के अनुसार चलते हैं। ये शिक्षक अन्य लोगो पर भी विश्वास रखते हैं। और अपनी छात्रों की समस्याओं के समाधान में पूर्ण योगदान देते हैं।

2.1.8 ओजमेन आर. एच. (1956) 'ओजमेन' ने कक्षा में अध्ययन आदत परिवर्तन पर अध्ययन किया।

निष्कर्ष:उन्होंने पाया कि पाठ्य-पुस्तकें और अध्ययन सामग्री आदतों को बदलने में सहायक नहीं होती, क्यां`कि वे सामाजिक क्रियाओं के कारण बताकर उन्हें सुलझाने का प्रयास नहीं करती। कक्षा में यदि कारणों की विवेचना की जाये तो उससे छात्रों में आदते बनने में अधिक सहायता मिल सकती हैं।

3.0 अध्ययन की आवष्यकता:-

शिक्षा वह साधन है, जिससे बालक की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियो का विकास होता हैं। षिक्षा व्यक्ति के चरित्र को उत्कृष्ट बनाती हैं। यह व्यक्ति को सभ्य बनाती हैं। षिक्षा के द्वारा व्यक्ति सही रूप में चिंतन करना सिखता है तथा षिक्षा के बिना व्यक्ति संपूर्णता को प्राप्त नहं ी कर सकता।

शिक्षा प्राप्त करते-करते बालक अपने घर से कुछ आदतें भी ग्रहण करता हैं। जिससे वहां बालक अनुशासन कार्यों को समय पर पूरा करना तथा व्यवहार करना सीखता हैं। अध्ययन आदत से बालक-बालिकाओं में शैक्षिक उपलब्धि का विकास होता हैं तथा वह षिक्षा एवं शैक्षिक आदते केवल माता-पिता से ही नहीं बल्कि अपने भाई व बहनों से भी सीखता हैं। जिसका सकारात्मक प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता हैं। घर के अन्य सदस्य भी बालकों की अध्ययन आदतों को विकसित करने में सहयोग देते हैं। जबकि बालक स्वयं अध्ययन आदत का विकास करके शैक्षिक उपलब्धि ग्रहण करने की कोषिष करने में समर्थ होने की चेष्टा करते हैं। जिसके कारण बालक अपने अध्ययन आदत, शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं।

विद्यार्थी चाहे विज्ञान का हो या कला संकाय का हो दोनों ही विद्यार्थियों में अध्ययन आदतों का निर्माण उनके परिश्रम के द्वारा ही किया जाता हैं, जिनकी शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण भूमिका रहती हैं। दोनों ही प्रकार के विद्यार्थियों में अपनी अध्ययन आदत विकसित की जा सकती है। जिसका प्रभाव विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक पड़ता हैं। अतः माता-पिता, शि क्षक, अभिभावक का कर्तव्य हैं, कि वे बालकों में शैक्षिक उपलब्धि का स्तर उंचा उठाने के लिए उनमें अच्छी अध्ययन आदतों को विकास करें। अतः उक्त बातें अध्ययन की आवश्यकता को व्यक्त करता है।

4.0 शोध उद्देश्य :

1. बालक एवं बालिकाओं के अध्ययन आदत का अध्ययन।

2. कला संकाय के बालक एवं बालिकाओं के अध्ययन आदत का अध्ययन।

3. विज्ञान संकाय के बालक एवं बालिका तथा कला संकाय के बालक-बालिकाओं के अध्ययन आदत का अध्ययन।

Nidhi Vatsa
Dr. Nidhi Vats
Assistant Profess
B.Ed. Regular
DDE, LNMU
Darbhanga

4. विज्ञान संकाय की बालिका एवं कला संकाय की बालिका के अध्ययन आदत का अध्ययन।
5. विज्ञान संकाय के बालक एवं कला संकाय के बालिकाओं के अध्ययन आदत का अध्ययन।

5.0 शोध परिकल्पना :

प्रस्तुत शोध के लिए निम्नलिखित परिकल्पना का निर्माण किया गया है-

1.बालक एवं बालिकाओं के अध्ययन आदत में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

2.कला संकाय के बालक एवं बालिकाओं के अध्ययन आदत में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

3.विज्ञान संकाय के बालक एवं बालिका तथा कला संकाय के बालक-बालिकाओं के बीच सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

4.विज्ञान संकाय की बालिका एवं कला संकाय की बालिका के बीच सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

5.विज्ञान संकाय के बालक एवं कला संकाय के बालिकाओं के अध्ययन आदत में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

6.0. शोध विधि:

शोध विधि के अंतर्गत सर्वेक्षण एवं साक्षातकार विधि का प्रयोग किया जाएगा।

7.0. जनसंख्या:

जनसंख्या के रूप में बिहार के वैशाली जिला के 10 विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों को लिया जाएगा।

8.0. न्यायदर्श (सैम्पल) एवं न्यायदर्श विधि:

किसी भी अध्ययन में संपूर्ण जनसंख्या को लेकर अध्ययन कर पाना संभव नहीं है। अतः शोध कार्य के लिए प्रतिनिधि कार्यों का चयन किया जाता है जो समष्टि का प्रतिनिधित्व करती है

* प्रस्तुत अध्ययन में प्रतिदर्श का चयन उद्देश्य पूर्ण प्रतिदर्श विधि द्वारा किया जाएगा।
* अध्ययन हेतु बिहार राज्य के वैशाली जिले के 10 विद्यालयों में अध्ययनरत कुल 500 छात्रों को लिया जाएगा।
* जिसमें कुल 200 बालक एवं 300 बालिकाओं को शामिल किया जाएगा।

9.0 शोध उपकरण:

* प्रस्तुत शोध में डाटा संग्रह हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा।
* गुणवत्ता को सस्थापित करने के लिए उपलब्ध मानक उपकरणों का भी उपयोग किया जायेगा।

10.0 प्रदत विश्लेषण:

प्रस्तुत शोध में डाटा विश्लेषण के लिए मध्यमान टी.टेस्ट एवं सहसंबंध विधि का प्रयोग किया जायेगा।

11.0 अध्यायीकरण :-

अध्याय – 1 : प्रस्तावना
अध्याय – 2 : संबंधित साहित्य समीक्षा
अध्याय – 3 : शोध विधि
अध्याय – 4 : प्रदत विश्लेषण
अध्याय – 5 : सारांश एवं निष्कर्ष
सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

Rekha Kumari
07-03-24